भावलिंगी संत भावी अरिहंत, परम पूज्य राष्ट्रयोगी

श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज की पूजन

रचियता : श्रमण श्री विचिन्त्य सागर मुनि

।। स्थापना ।।

हे वंदनीय! हे पूज्यनीय! हे करुणावत! तुम्हें प्रणाम।
हे महामुनि! हे महासंत! भावी अरहंत! तुम्हें प्रणाम।
सौभाग्य जगे भवि जीवों के भव भव के पावन पुण्य फले
जो गुरू विमर्श में भावी पद्मप्रभ केवलि के दर्श मिले।।
आओ हृदयासन पर आओ हे नाथ ! पुकार लगाता हूँ।
हे अनासक्त योगी! आओ श्रद्धा से तुम्हें बुलाता हूँ।

ॐ ह्रूँ प.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्, अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

।। जल ।।

अजनबी आत्मा से अब तक, बस जनम मरण करता आया।
दुख सहे अनंतो बार मगर भव सिंधु तीर न मिल पाया।
गुरूदेव ! आपके चरण मिले, आचरण मिले, शुभ शरण मिले।
ये प्रासुक जल अर्पित गुरूवर ! अब जनम मिले न मरण मिले।

ॐ ह्रूँ प.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

।। चंदन ।।

संतप्त रहे अब तक गुरुवर!, अपने स्वभाव से अनजाने।
चंदन चरणों में लाये हैं स्वाभाविक शीतलता पाने।।
रागादिक भावों की ज्वाला से झुलसा अंतस का उपवन।
भवताप मिटाओ हे यतिवर ! चरणों में करता हूँ वंदन।।

ॐ ह्रूँ प.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ अक्षत ॥

पर्यायों में रंजायमान नाना पद की मन चाह लिये।
चारों गतियों में भ्रमण किया नित इन्द्रिय विषय कषाय लिये।
गुरुवर ! अगम्य आगम में रम, तुमने निज पद को पाया है।
अक्षय निज पद पाने गुरूवर ! ये अक्षत अर्घ्य चढ़ाया है।

ॐ ह्रूँ प.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय अक्षय पदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ पुष्प ॥

कामादिक भावों ने अब तक पर्याय मेरी हर लूटी है।
इस मदन दर्प में हे गुरूवर ! निज परिणति लगती झूठी है।
शैलेषी भावों का वैभव निज परम ब्रह्म की छाया में।
पाने को पुष्प समर्पित हैं, गुरुदेव शरण में आया मैं।

ॐ ह्रूँ प.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ नैवेद्य ॥

नाना व्यञ्जन मय पुद्गल को खा खाकर तन को पुष्ट किया।
लेकिन निज चिदानंद रस से न चेतन को संतुष्ट किया।
इस महरोग की उपशमना का मार्ग आपने बतलाया।
इसलिए सजा नैवेद्य थाल हे गुरुवर ! चरणों में आया।

ॐ ह्रूँ प.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वमापीति स्वाहा।

॥ दीप ॥

निर्मोह स्वभावी आतम की जब ज्योति प्रखर हो जायेगी।
तब मोह भाव की अँधियारी ये रात स्वयं खो जायेगी।
गुरुदेव आपने स्वानुभूति का जगमग दीप जलाया है।
निज मोह मेंटने दास चरण में मृणमय दीपक लाया है॥

ॐ ह्रूँ प.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ धूप ॥

जब मैंने काषायिक भावों का नेह निमंत्रण भेजा था।
तब तब आकर के कर्मों ने चेतन स्वभाव को छेदा था।
निष्कर्म आत्मा की महिमा, गुरुवर जब से दिखलाई है।
तब से कर्मों को दहकाने निज अनुभव अनल जलाई है॥

ॐ ह्रूँ प.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ फल ॥

पग पग कर्मों का है विपाक, पग पग सुख दुख फल देते हैं।
नाना रूपों में छलिया बन आतम स्वभाव छल लेते हैं।
शाश्वत सुख रस मय शिवफल को पाने का पथ दर्शाया है।
इसलिए दास ये उत्तम फल की भेंट चढ़ाने लाया है॥

ॐ ह्रूँ प.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय महामोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

।। अर्घ्य ।।

निज है अनर्घ्य आतम स्वभाव लेकिन स्वभाव का बोध नहीं।
पर में खोया, पर को रोया, शाश्वत स्वभाव पर शोध नहीं।।
निज का अनर्घ्य वैभव पाने, यह अर्घ्य समर्पित करता हूँ।
चेतन का पर्श, विमर्श मिले, गुरुवर विमर्श उर धरता हूँ।।

ॐ ह्रूँ प.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।। जयमाला ।।

भव भव पाप पुण्य शातिशय जब बनकर विपाक लहराता है
तब गुरु विमर्शसागर बनकर भगवान धरा पर आता है।
कई कई पूरब पर्यायों में निर्ग्रंथ भावलिंगी बनकर।
रत्नत्रय धर्म सजाया था शुभ भावों से आराधन कर।।
गुरुवर ने पूरब भव में भी निर्ग्रंथ दशा आराधी थी।
बन करके महामुनि गुरुवर ने श्रेष्ठ समाधि साधी थी।।

लेकिन मृत्यु की बेला में किंचित करुणा आई मन में।
इसलिए स्वर्ग न जाकर के गुरुवर जन्मे मानव तन में।।
तब नगर जतारा पिता सनत, माता भगवति हर्षाईं थी।
भावी अर्हंत आगमन था सृष्टि में खुशियाँ छाईं थीं।।
यौवन आया वैराग्य जगा निर्ग्रंथ महामुनिराज बने।
फिर भवि जीवों का हित करने आचार्य परम गुरुराज बने।।
छत्तीस मूलगुण का पालन संग आत्म ध्यान का बल पाया।
प्रगटी जब भावलिंग महिमा त्रय लोको में अतिशय छाया।।
पंचम युग में दुर्लभतम थी वो शांति भक्ति खुद सिद्ध हुई।
अर्हंत बनेंगे गुरुवर जी भावी पर्याय प्रसिद्ध हुई।।
संकट मोचन तारणहारे हैं, गुरु विमर्श के जयकारे।
जो भी श्रद्धा से जप लेता, मिट जाते उसके दुख सारे।।
गुरुवर छोटे बाबा अहार जी के जग में जाने जाते हैं।

देवाधिदेव श्री शान्तिनाथ जी बाबा बड़े कहाते हैं।।
कर श्रेष्ठ समाधि का साधन गुरुदेव यहाँ से जायेंगे।
जाकर के ब्रह्म स्वर्ग में वो लोकान्तिक पदवी पायेंगे।।
भव एक मात्र रह गया शेष ये ब्रह्मऋषी निज रमण करें।
वैराग्य भाव का अनुमोदन, वैराग्य भाव अनुभवन करें।।
इस ब्रह्मस्वर्ग से चयकर वो ऐरावत क्षेत्र पधारेंगे।
बन ब्रह्मदेव राजा के सुत, चक्री की पदवी धारेंगे।।
होंगे ये पद्म चक्रवर्ती, भारी विरक्तता धारेंगे।
चक्री का वैभव पाकर भी, किंचित भी न स्वीकारेंगे।।
इन चक्रवर्ती के सुत बनकर तीर्थंकर अवतारी होंगे।
अपने सुत को दे राजपाट फिर चक्री वैरागी होंगे।।
धर भेष दिगम्बर महामुनि निज आतम ध्यान लगायेंगे।

तब सहज घातिया कर्म नाश, अर्हंत दशा प्रगटायेंगे॥
कैवल्य सम्पदा प्रगटेगी सुर नर खग सब हर्षायेंगे।
पद्मप्रभ केवलज्ञानी की नाना स्तुतियाँ गायेंगे॥
जब पद्मप्रभ स्वामी जिनेन्द्र की दिव्य देशना बिखरेगी।
सुन करके भव्य प्राणियों की चेतन परिणतियाँ निखरेंगी॥
फिर शेष अघाति नाश प्रभु निर्वाण दशा प्रगटायेंगे।
अव्याबाधत्व महासुख पा सिद्धालय में बस जायेंगे॥
है महापुण्य का उदय हुआ, आओ गुरु का वंदन करलें।
बस दो भव के अवतारी हैं, भावों को श्रद्धा से भरलें॥
गुरु विमर्श सागर बने हैं जो निर्मल संत।
भावी पद्मप्रभ बनेंगे ये ही अरहंत॥

ॐ ह्रूँ प.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
।।पुष्पांजलि क्षिपामि।।